15

fo".kq lglzukeLrks=&IV

प्रिय शिक्षार्थी, यह पाठ पूर्व पाठ के क्रम में ही है जिसमें आपने विष्णुस्रनामस्तोत्र के श्लोकों तथा उनके अर्थ के विषय में जाना है। इस पाठ में आप आगे के श्लोकों को पढेंगें।

mís';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- पढ़े गये श्लोकों का अर्थ समझ पानें में ।

15.1 fo".kq lglzuke Lrks= & IV

lçlknks çlUukRek fo'o/k`fXo'oHkqfXoHkq% A

lRdrkZ lRd`r% lk/kqtZàuqukZjk;.kks uj% AA „^ AA

235	धरणीधरः	वराहरूप से पृथ्वी को धारण करने वाले हैं
236	सुप्रसादः	जिनकी कृपा अति सुन्दर है
237	प्रसन्नात्मा	जिनका अन्तः करण रज और तम से दूषित नहीं है
238	विश्वधृक्	विश्व को धारण करने वाले हैं
239	विश्वभुक्	विश्व का पालन करने वाले हैं
240	विभुः	हिरण्यगर्भादिरूप से विविध होते हैं
241	सत्कर्ता	सत्कार करते अर्थात पूजते हैं
242	सत्कृतः	पूजितों से भी पूजित
243	साधुः	साध्यमात्र के साधक हैं
244	जह्नुः	अज्ञानियों को त्यागते और भक्तो को परमपद पर ले जाने वाले
245	नारायणः	नर से उत्पन्न हुए तत्व नार हैं जो भगवान् के अयन (घर) थे
246	नरः	नयन कर्ता है इसलिए सनातन परमात्मा नर कहलाता है

vl³[;s;ks·çes;kRek fof'k"V% f'k"V—PNqfp% A
fl)kFk% fl)l³dYi% flf)n% flf)lk/ku% AA „% AA

247	असंख्येय:	जिनमे संख्या अर्थात नाम रूप भेदादि नहीं हो
248	अप्रमेयात्मा	जिनका आत्मा अर्थात स्वरुप अप्रमेय है
249	विशिष्ट:	जो सबसे अतिशय (बढे चढ़े) हैं
250	शिष्टकृत्	जो शासन करते हैं
251	शुचि:	जो मलहीन है
252	सिद्धार्थ:	जिनका अर्थ सिद्ध हो
253	सिद्धसंकल्प:	जिनका संकल्प सिद्ध हो
254	सिद्धिद:	कर्ताओं को अधिकारानुसार फल देने वाले
255	सिद्धिसाधन:	सिद्धि के साधक

o"kkgh o"kHkks fo".kqo"kZioZk o"kksnj% A
o/kZuks o/kZekuLp fofoä% JqfrlkxJ% AA „Š AA

256	वृषाही	जिनमे वृष(धर्म) जोकि अह: (दिन) है वो स्थित है
257	वृषभ:	जो भक्तों के लिए इच्छित वस्तुओं की वर्षा करते हैं
258	विष्णु:	सब और व्याप्त रहने वाले
259	वृषपर्वा	धर्म की तरफ जाने वाली सीढ़ी

d{kk & 5

fVli.kh

260 वृषोदरः — जिनका उदर मानो प्रजा की वर्षा करता है

261 वर्धनः — बढ़ाने और पालना करने वाले

262 वर्धमानः — जो प्रपंचरूप से बढ़ते हैं

263 विविक्तः — बढ़ते हुए भी पृथक ही रहते हैं

264 श्रुतिसागरः — जिनमे समुद्र के सामान श्रुतियाँ रखी हुई हैं

lHkh tks n/kjk okXeh egUæk olnk ol% A

uSd : ik cgæi% f'kfifo"V% çdk'ku% AA „‹ AA

265 सुभुजः — जिनकी जगत की रक्षा करने वाली भुजाएं अति सुन्दर हैं

266 दुर्धरः — जो मुमुक्षुओं के ह्रदय में अति कठिनता से धारण किये जाते हैं

267 वाग्मी — जिनसे वेदमयी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ है

268 महेन्द्रः — ईश्वरों के भी इश्वर

269 वसुदः — वसु अर्थात धन देते हैं

270 वसुः — दिया जाने वाला वसु (धन) भी वही हैं

271 नैकरूपः — जिनके अनेक रूप हों

272 बृहद्रूपः — जिनके वराह आदि बृहत् (बड़े–बड़े) रूप हैं

273 शिपिविष्टः — जो शिपि (पशु) में यज्ञरूप में स्थित होते हैं

274 प्रकाशनः — सबको प्रकाशित करने वाले

vkstLrstk|fr/kj% çdk'kkRek çrkiu% A
_)% Li"Vk{kjk eU='pUæk'kHkkLdj|fr% AA …å AA

275 ओजस्तेजोद्युतिधरः ओज, प्राण और बल को धारण करने वाले

276 प्रकाशात्मा जिनकी आत्मा प्रकाश स्वरुप है

277 प्रतापनः जो अपनी किरणों से धरती को तप्त करते हैं

278 ऋद्धः जो धर्म, ज्ञान और वैराग्य से संपन्न हैं

279 स्पष्टाक्षरः जिनका ओंकाररूप अक्षर स्पष्ट है

280 मन्त्रः मन्त्रों से जानने योग्य

281 चन्द्रांशुः मनुष्यों को चन्द्रमा की किरणों के समान आल्हादित करने वाले

282 भास्करद्युतिः सूर्य के तेज के समान धर्म वाले

ve`rk'kn~Hkok Hkkuq% 'k'kfcUnq% lqj'oj% A
vk"k/k txr% lr% lR;/keZijkØe% AA …f AA

283 अमृतांशोद्भवः समुद्र मंथन के समय जिनके कारण चन्द्रमा की उत्पत्ति हुई

284 भानुः भासित होने वाले

285 शशबिन्दुः चन्द्रमा के समान प्रजा का पालन करने वाले

286 सुरेश्वरः देवताओं के इश्वर

fVIi.kh

287 औषधम् — संसार रोग के औषध

288 जगतः सेतुः — लोकों के पारस्परिक असंभेद के लिए इनको धारण करने वाला सेतु

289 सत्यधर्मपराक्रमः जिनके धर्म–ज्ञान और पराक्रमादि गुण सत्य है

HkrHkO;HkoUukFk% iou% ikouks·uy% A

dkegk dke—RdkUr% dke% dkeçn% çHkq% AA ...„ AA

290 भूतभव्यभवन्नाथः — भूत, भव्य (भविष्य) और भवत (वर्तमान) प्राणियों के नाथ है

291 पवनः — पवित्र करने वाले हैं

292 पावनः — चलाने वाले हैं

293 अनलः — प्राणों को आत्मभाव से ग्रहण करने वाले हैं

294 कामहा — मोक्षकामी भक्तों और हिंसकों की कामनाओं को नष्ट करने वाले

295 कामकृत् — सात्विक भक्तों की कामनाओं को पूरा करने वाले हैं

296 कान्तः — अत्यंत रूपवान हैं

297 कामः — पुरुषार्थ की आकांक्षा वालों से कामना किये जाते हैं

298 कामप्रदः — भक्तों की कामनाओं को पूरा करने वाले हैं

299 प्रभुः — प्रकर्ष

d{kk & 5

fVIi.kh

;qxkfn—|qxkorksZ uSdek;ks egk'kuŸ A
v–';ks O;ä:i'p lglzftnuUrftr~ AA ...... AA

300 युगादिकृत् युगादि का आरम्भ करने वाले हैं

301 युगावर्तः सतयुग आदि युगों का आवर्तन करने वाले हैं

302 नैकमायः अनेकों मायाओं को धारण करने वाले हैं

303 महाशनः कल्पांत में संसार रुपी अशन (भोजन) को ग्रसने वाले

304 अदृश्यः समस्त ज्ञानेन्द्रियों के अविषय हैं

305 व्यक्तरूपः स्थूल रूप से जिनका स्वरुप व्यक्त है

306 सहस्रजित् युद्ध में सहस्रों देवशत्रुओं को जीतने वाले

307 अनन्तजित् अचिन्त्य शक्ति से समस्त भूतों को जीतने वाले

b"Vks·fof'k"V% f'k"VsV% f'k[k.Mh ugq"kks o"k% A
Øks/kgk Øks/k—Rdrkz fo'ockgqeZgh/kj% AA ...† AA

308 इष्टः यज्ञ द्वारा पूजे जाने वाले

309 विशिष्टः अन्तर्यामी

310 शिष्टेष्टः विद्वानों के ईष्ट

311 शिखण्डी शिखण्ड (मयूरपिच्छ) जिनका शिरोभूषण है

312 नहुषः भूतों को माया से बाँधने वाले

313	वृषः	कामनाओं की वर्षा करने वाले
314	क्रोधहा	साधुओं का क्रोध नष्ट करने वाले
315	क्रोधकृत्कर्ता	क्रोध करने वाले दैत्यादिकों के कर्तन करने वाले हैं
316	विश्वबाहुः	जिनके बाहु सब ओर हैं
317	महीधरः	महि (पृथ्वी) को धारण करते हैं

vP;qr% çfFkr% çk.k% çk.kn% oklokuqt% A
vikfuf/kjf/k"Bkueçeùk% çfrf"Br% AA ...‡ AA

318	अच्युतः	छः भावविकारों से रहित रहने वाले
319	प्रथितः	जगत की उत्पत्ति आदि कर्मो से प्रसिद्ध
320	प्राणः	हिरण्यगर्भ रूप से प्रजा को जीवन देने वाले
321	प्राणदः	देवताओं और दैत्यों को प्राण देने या नष्ट करने वाले हैं
322	वासवानुजः	वासव (इंद्र) के अनुज (वामन अवतार)
323	अपां–निधिः	जिसमे अप (जल) एकत्रित रहता है वो सागर हैं
324	अधिष्ठानम्	जिनमे सब भूत स्थित हैं
325	अप्रमत्तः	कर्मानुसार फल देते हुए कभी चूकते नहीं हैं
326	प्रतिष्ठितः	जो अपनी महिमा में स्थित हैं

LdUn% LdUn/kjk /k;k ojnk ok;qokgu% A
ok lqnsok cgn~Hkkuqjkfnno% iqjUnj% AA ...^ AA

327	स्कन्दः	स्कंदन करने वाले हैं
328	स्कन्दधरः	स्कन्द अर्थात धर्ममार्ग को धारण करने वाले हैं
329	धूर्यः	समस्त भूतों के जन्मादिरूप धुर (बोझे) को धारण करने वाले हैं
330	वरदः	इच्छित वर देने वाले हैं
331	वायुवाहनः	आवह आदि सात वायुओं को चलाने वाले हैं
332	वासुदेवः	जो वासु हैं और देव भी हैं
333	बृहद्भानुः	अति बृहत् किरणों से संसार को प्रकाशित करने वाले
334	आदिदेवः	सबके आदि हैं और देव भी हैं
335	पुरन्दरः	देवशत्रुओं के पूरों (नगर)का ध्वंस करने वाले हैं

v'kksdLrkj.kLrkj% 'kj% 'kkSfj tu'oj% A
vuqdy% 'krkor% ineh inefuHk{k.k% AA ...‰ AA

336	अशोकः	शोकादि छः उर्मियों से रहित हैं
337	तारणः	संसार सागर से तारने वाले हैं
338	तारः	भय से तारने वाले हैं

339	शूरः	पुरुषार्थ करने वाले हैं
340	शौरिः	वासुदेव की संतान
341	जनेश्वरः	जन अर्थात जीवों के इश्वर
342	अनुकूलः	सबके आत्मारूप हैं
343	शतावर्तः	जिनके धर्म रक्षा के लिए सैंकड़ों अवतार हुए हैं
344	पद्मी	जिनके हाथ में पद्म है
345	पद्मनिभेक्षणः	जिनके नेत्र पद्म समान हैं

ineukHkk· jfoUnk{k% inexHk% 'kjhjHk`r~ A
egfn`/kj`)ks o`)kRek egk{kks x#M/otk% AA …Š AA

346	पद्मनाभः	हृदयरूप पद्म की नाभि के बीच में स्थित हैं
347	अरविन्दाक्षः	जिनकी आँख अरविन्द (कमल) के समान है
348	पद्मगर्भः	हृदयरूप पद्म में मध्य में उपासना करने वाले हैं
349	शरीरभृत्	अपनी माया से शरीर धारण करने वाले हैं
350	महर्द्धिः	जिनकी विभूति महान है
351	ऋद्धः	प्रपंचरूप
352	वृद्धात्मा	जिनकी देह वृद्ध या पुरातन है
353	महाक्षः	जिनकी अनेको महान आँखें (अक्षि) हैं
354	गरुडध्वजः	जिनकी ध्वजा गरुड़ के चिन्ह वाली है

vrqy% 'kjHkks Hkhe% le;Kks gfogZfj% A
lo|y{k.ky{k.;ks y{ehoku lfefr¥t ;% AA ‥‹ AA

355 अतुलः जिनकी कोई तुलना नहीं है

356 शरभः जो नाशवान शरीर में प्रयगात्मा रूप से भासते हैं

357 भीमः जिनसे सब डरते हैं

358 समयज्ञः समस्त भूतों में जो समभाव रखते हैं

359 हविर्हरिः यज्ञों में हवि का भाग हरण करते हैं

360 सर्वलक्षणलक्षण्यः परमार्थस्वरूप

361 लक्ष्मीवान् जिनके वक्ष स्थल में लक्ष्मी जी निवास करती हैं

362 समितिञ्जयः समिति अर्थात युद्ध को जीतते हैं

fo{kjks jksfgrks ekxks gsrqnkZeksnj% lg% A
egh/kjks egkHkkxks osxokufervk'ku% AA †å AA

363 विक्षरः जिनका क्षर अर्थात नाश नहीं है

364 रोहितः अपनी इच्छा से रोहितवर्ण मूर्ति का स्वरुप धारण करने वाले

365 मार्गः जिनसे परमानंद प्राप्त होता है

366 हेतुः संसार के निमित्त और उपादान कारण हैं

367 दामोदरः दाम लोकों का नाम है जिसके वे उदर में हैं

368 सहः सबको सहन करने वाले हैं

369	महीधरः	पर्वतरूप होकर मही को धारण करते हैं
370	महाभागः	हर यज्ञ में जिन्हे सबसे बड़ा भाग मिले
371	वेगवान्	तीव्र गति वाले हैं
372	अमिताशनः	संहार के समय सारे विश्व को खा जाने वाले हैं

mnHko% {kkHk.kk no% JhxHk% ije'oj% A
dj.k dkj.k drk fodrk xguk xg% AA †f AA

373	उद्भवः	भव यानी संसार से ऊपर हैं
374	क्षोभणः	जगत की उत्पत्ति के समय प्रकृति और पुरुष में प्रविष्ट होकर क्षुब्ध करने वाले
375	देवः	जो स्तुत्य पुरुषों से स्तवन किये जाते हैं और सर्वत्र जाते हैं
376	श्रीगर्भः	जिनके उदर में संसार रुपी श्री स्थित है
377	परमेश्वरः	जो परम है और ईशनशील हैं
378	करणम्	संसार की उत्पत्ति के सबसे बड़े साधन हैं
379	कारणम्	जगत के उपादान और निमित्त
380	कर्ता	स्वतन्त्र
381	विकर्ता	विचित्र भुवनों की रचना करने वाले हैं
382	गहनः	जिनका स्वरुप, सामर्थ्य या कृत्य नहीं जाना जा सकता
383	गुहः	अपनी माया से स्वरुप को ढक लेने वाले

0;olk;ks 0;oLFkku% lLFkku% LFkkunks /kzqo% A
ijf/k% ijeLi"VLrq"V% iq"V% 'kqHks{k.k% AA †„ AA

384 व्यवसायः ज्ञानमात्रस्वरूप

385 व्यवस्थानः जिनमे सबकी व्यवस्था है

386 संस्थानः परम सत्ता

387 स्थानदः ध्रुवादिकों को उनके कर्मों के अनुसार स्थान देते हैं

388 ध्रुवः अविनाशी

389 परर्धिः जिनकी विभूति श्रेष्ठ है

390 परमस्पष्टः परम और स्पष्ट हैं

391 तुष्टः परमानन्दस्वरूप

392 पुष्टः सर्वत्र परिपूर्ण

393 शुभेक्षणः जिनका दर्शन सर्वदा शुभ है

jkeks fojkeks fojtks ekxksZ us;ks u;ks·u;% A
ohj% 'kfäerka Js"Bks /keksZ /keZfonqÙke% AA †… AA

394 रामः अपनी इच्छा से रमणीय शरीर धारण करने वाले

395 विरामः जिनमे प्राणियों का विराम (अंत) होता है

396 विरजः विषय सेवन में जिनका राग नहीं रहा है

397 मार्गः जिन्हे जानकार मुमुक्षुजन अमर हो जाते हैं

d{kk & 5

fVIi.kh

398 नेयः ज्ञान से जीव को परमात्वभाव की तरफ ले जाने वाले

399 नयः नेता

400 अनयः जिनका कोई और नेता नहीं है

401 वीरः विक्रमशाली

402 शक्तिमतां श्रेष्ठः सभी शक्तिमानों में श्रेष्ठ

403 धर्मः समस्त भूतों को धारण करने वाले

404 धर्मविदुत्तमः श्रुतियाँ और स्मृतियाँ जिनकी आज्ञास्वरूप है

oSdq.B% iq#"k% çk.k% çk.kn% ç.ko% iFkq% A
fgj.;xHkZ% 'k=q?uks O;kIrks ok;qj/kks{kt% AA †† AA

405 वैकुण्ठः जगत के आरम्भ में बिखरे हुए भूतों को परस्पर मिलाकर उनकी गति रोकने वाले

406 पुरुषः सबसे पहले होने वाले

407 प्राणः प्राणवायुरूप होकर चेष्टा करने वाले हैं

408 प्राणदः प्रलय के समय प्राणियों के प्राणों का खंडन करते हैं

409 प्रणवः जिन्हे वेद प्रणाम करते हैं

410 पृथुः प्रपंचरूप से विस्तृत हैं

411 हिरण्यगर्भः ब्रह्मा की उत्पत्ति के कारण

412 शत्रुघ्नः देवताओं के शत्रुओं को मारने वाले हैं

413 व्याप्तः सब कार्यों को व्याप्त करने वाले हैं

414 वायुः गंध वाले हैं

415 अधोक्षजः जो कभी अपने स्वरुप से नीचे न हो

_rq% lqn'kZu% dky% ijesBh ifjxg% A
mxz% laoRlj% n{kks foJkeks fo'onf{k.k% AA †‡ AA

416 ऋतुः ऋतु शब्द द्वारा कालरूप से लक्षित होते हैं

417 सुदर्शनः उनके नेत्र अति सुन्दर हैं

418 कालः सबकी गणना करने वाले हैं

419 परमेष्ठी हृदयाकाश के भीतर परम महिमा में स्थित रहने के स्वभाव वाले

420 परिग्रहः भक्तों के अर्पण किये जाने वाले पुष्पादि को ग्रहण करने वाले

421 उग्रः जिनके भय से सूर्य भी निकलता है

422 संवत्सरः जिनमे सब भूत बसते हैं

423 दक्षः जो सब कार्य बड़ी शीघ्रता से करते हैं

424 विश्रामः मोक्ष देने वाले हैं

425 विश्वदक्षिणः जो समस्त कार्यों में कुशल हैं

fVIi.kh

foLrkj% LFkkojLFkk.kq% çek.ka chtef0;;e~ A
vFkks·uFkks egkdks'kks egkHkksxks egk/ku% AA †^ AA

426 विस्तारः   जिनमे समस्त लोक विस्तार पाते हैं

427 स्थावरस्स्थाणुः स्थावर और स्थाणु हैं

428 प्रमाणम्   संवितस्वरूप

429 बीजमव्ययम्   बिना अन्यथाभाव के ही संसार के कारण हैं

430 अर्थः   सबसे प्रार्थना किये जाने वाले हैं

431 अनर्थः   जिनका कोई प्रयोजन नहीं है

432 महाकोशः   जिन्हे महान कोष ढकने वाले हैं

433 महाभोगः   जिनका सुखरूप महान भोग है

434 महाधनः   जिनका भोगसाधनरूप महान धन है

vfufo..k% LFkfo"Bks·Hkw/keZ;wik egke[k% A
u{k=ufeu{k=h {ke% {kke% lehgu% AA †‰ AA

435 अनिर्विण्णः   जिन्हे कोई निर्वेद (उदासीनता) नहीं है

436 स्थविष्ठः   वैराजरूप से स्थित होने वाले हैं

437 अभूः   अजन्मा

438 धर्मयूपः   धर्म स्वरुप यूप में जिन्हे बाँधा जाता है

439	महामखः	जिनको अर्पित किये हुए मख (यज्ञ) महान हो जाते हैं
440	नक्षत्रनेमिः	सम्पूर्ण नक्षत्रमण्डल के केंद्र हैं
441	नक्षत्री	चन्द्ररूप
442	क्षमः	समस्त कार्यों में समर्थ
443	क्षामः	जो समस्त विकारों के क्षीण हो जाने पर आत्मभाव से स्थित रहते हैं
444	समीहनः	सृष्टि आदि के लिए सम्यक चेष्टा करते हैं

;K bT;k egT;'p Ørq% l= lrka xfr% A
loZn'khZ foeqäkRek loZKks KkueqÙkee~ AA †ŠAA

445	यज्ञः	सर्वयज्ञस्वरूप
446	इज्यः	जो पूज्य हैं
447	महेज्यः	मोक्षरूप फल देने वाले सबसे अधिक पूजनीय
448	क्रतुः	तद्रूप
449	सत्रम्	जो विधिरूप धर्म को प्राप्त करता है
450	सतां–गतिः	जिनके अलावा कोई और गति नहीं है
451	सर्वदर्शी	जो प्राणियों के सम्पूर्ण कर्मों को देखते हैं
452	विमुक्तात्मा	स्वभाव से ही जिनकी आत्मा मुक्त है

453	सर्वज्ञः	जो सर्व है और ज्ञानरूप है
454	ज्ञानमुत्तमम्	जो प्रकृष्ट, अजन्य, और सबसे बड़ा साधक ज्ञान है।

lqorZ% lqe[k% lw{e% lq?kks"k% lq[kn% lqâr~ A
euksgjks ftrØks/kks ohjckgqfonkj.k% AA †‹ AA

455	सुव्रतः	जिन्होंने अशुभ व्रत लिया है
456	सुमुखः	जिनका मुख सुन्दर है
457	सूक्ष्मः	शब्दादि स्थूल कारणों से रहित हैं
458	सुघोषः	मेघ के समान गंभीर घोष वाले हैं
459	सुखदः	सदाचारियों को सुख देने वाले हैं
460	सुहृत्	बिना प्रत्युपकार की इच्छा के ही उपकार करने वाले हैं
461	मनोहरः	मन का हरण करने वाले हैं
462	जितक्रोधः	क्रोध को जीतने वाले
463	वीरबाहुः	अति विक्रमशालिनी बाहु के स्वामी
464	विदारणः	अधार्मिकों को विदीर्ण करने वाले हैं

d{kk & 5

fVIi.kh

Lokiu% Loo'kk 0;kih uSdkRek uSddeZ—r~ A
oRljks oRlyks oRlh jRuxHkkZs /kus'oj% AA ‡å AA

465	स्वापनः	जीवों को माया से आत्मज्ञानरूप जाग्रति से रहित करने वाले हैं
466	स्ववशः	जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण हैं
467	व्यापी	सर्वव्यापी
468	नैकात्मा	जो विभिन्न विभूतियों के द्वारा नाना प्रकार से स्थित हैं
469	नैककर्मकृत्	जो संसार की उत्पत्ति, उन्नति और विपत्ति आदि अनेक कर्म करते हैं
470	वत्सरः	जिनमे सब कुछ बसा हुआ है
471	वत्सलः	भक्तों के स्नेही
472	वत्सी	वत्सों का पालन करने वाले
473	रत्नगर्भः	रत्न जिनके गर्भरूप हैं
474	धनेश्वरः	जो धनों के स्वामी हैं

ikBxr iz'u& 15-1

(1) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1. सुप्रसादः .... विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
2. असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः .... ।
3. सुभुजो दुर्धरो वाग्मी .... वसुदो वसुः ।
4. ओजस्तेजोद्युतिधरः .... प्रतापनः ।
5. अमृतांशूद्भवो भानुः .... सुरेश्वरः ।
6. भूतभव्यभवन्नाथः पवनः ....।
7. युगादिकृद्युगावर्तो .... महाशनः ।
8. इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः .... नहुषो वृषः ।
9. अच्युतः प्रथितः प्राणः .... वासवानुजः ।
10. स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो .... वायुवाहनः ।
11. अशोकस्तारणस्तारः शूरः .... ।

vkius D;k lh[kk\

- भगवान विष्णु के अलग–अलग नाम और अनके अर्थ।
- भगवान विष्णु के नामों द्वारा उनकी विशेषताएं।

ikBkr i'u

(I) नीचे दिये गये पदों के अर्थ लिखिए–

1. सुप्रसादः
2. सुभुजो
3. प्रतापनः
4. महाशनः
5. वायुवाहनः

mÙkjekyk

15.1

(1)

1.	प्रसन्नात्मा	2.	शिष्टकृच्छुचिः
3.	महेन्द्रो	4.	प्रकाशात्मा
5.	शशबिन्दुः	6.	पावनोऽनलः
7.	नैकमायो	8.	शिखण्डी
9.	प्राणदो	10.	वरदो
11.	शौरिर्जनेश्वरः		